आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received:09/12/2022; Accepted:12/12/2022; Reviewed:20/12/2022; Published:24/12/2022

प्रेमचन्द की रचनाओं में स्वाधीनता आंदोलन की भावना

- मिन्नु जोसेफ
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय-682022
केरल
ईमेल - minnuj96@gmail.com
मो नं -7356585177

मिन्नु जोसेफ, प्रेमचन्द की रचनाओं में स्वाधीनता आंदोलन की भावना, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022,(303-309)

शोध सार : भारतीय स्वाधीनता आंदोलन युगीन हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का स्थान महत्वपूर्ण है। परतंत्रता से भारत की मुक्ति प्रेमचंद की रचनाओं का मुख्य स्वर है। वे स्वाधीनता आंदोलन के रचनाकार ही नहीं बल्कि आलोचक भी थे। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक और लेखों के माध्यम से स्वराज्य और स्वाधीनता सम्बन्धी विचारों को पाठकों तक पहुँचाया। पूर्ण स्वाधीनता की परिकल्पना के अन्तर्गत उन्होंने साम्राज्यवादी और सामन्तवादी शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाया। अपनी संवेदनशील दृष्टि से स्वाधीनता संग्राम की विभिन्न पहलुओं को वाणी देकर उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन की विस्तृत व्याख्या किया। अपनी रचनाओं में व्यक्त स्वाधीनता और स्वराज्य के अथाह आग्रह उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के समय की रचनाकारों में अनूठा स्थान प्रदान करते हैं।

शोध आलेख

स्वाधीनता आन्दोलन भारतीय साहित्य के इतिहास का वह युग है जो पीड़ा, बलिदान, आत्मसमर्पण और देश प्रेम की भावनाओं से भरपूर है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारतीय जन मानस में एकता तथा देशप्रेम की लहरें उठ खड़ी हुई। स्वराज्य की भावना हरेक हिन्दुस्तानी के मन में एक स्वप्न के समान प्रतिष्ठित हुआ। सुनहरे भविष्य की आशा में प्रत्येक व्यक्ति ने अपने-अपने तरीके से लड़ाई की। तद्युगीन साहित्यकारों ने भी इस माहायज्ञ में पर्याप्त योगदान दिया। ब्रिटीश शासन के विरोध में प्रत्येक साहित्यकार ने अपनी सर्जना शक्ति के माध्यम से लोगों के दिल और दिमाग को प्रभावित किया। ब्रिटीश साम्राज्यवाद और देशी सामन्तवाद

के गठबन्धन पर प्रहार करते हुए प्रेमचन्द ने अपनी रचनात्मक जीवन प्रारंभ किया । जनता में देशप्रेम की भावना पैदा करने में प्रेमचन्द की भूमिका महत्वपूर्ण है । उनकी रचनाओं के मूल स्वर राष्ट्र मुक्ति की कामना ही था । वे स्वाधीनता आंदोलन के प्रतिनिधि रचनाकार थे । भारतीय स्वाधीनता आंदोलन युगीन हिन्दी साहित्य के इतिहास प्रेमचन्द के बिना अधूरा है । धनपत श्रीवास्तव से नवाब राय और फिर नवाब राय से प्रेमचन्द तक की यात्रा में उनके साहित्य के सारतत्व, परतंत्रता से भारत की मुक्ति ही था । प्रेमचन्द स्वाधीनता आंदोलन के सबसे बड़ा रचनाकार ही नहीं बल्कि जगरूक विचारक तथा आलोचक भी थे । कहानी, उपन्यास, लेख-निबन्ध और सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से प्रेमचन्द ने स्वराज्य संबंधी विचारों को पाठकों तक पहुँचाया । उनका रचना संसार राष्ट्र मुक्ति आंदोलन के उतार-चढ़ाव से सदा शक्ति ग्रहण करता रहा । स्वतंत्रता संग्राम की अवधारणा मुंशी प्रेमचन्द की रचनाओं का मूल स्वर हैं । प्रेमचन्द के साहित्य में राष्ट्र मुक्ति आंदोलन के विभिन्न स्तरों की जितनी अवधारणाएँ मिलते हैं, उतना तत्कालीन अन्य लेखकों के रचनाओं में दुर्लभ है । उन्होंने समाज के हर तबके के लोगों के स्तर से स्वतंत्रता आंदोलन को देखा और समझा । यही दृष्टिकोण उनकी रचनाओं को तत्विषयक अन्य रचनाओं से अलगाते है । डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में " प्रेमचन्द का सहित्य अपने ज़माने के हिन्दुस्तान और उसके स्वाधिनता आंदोलन का प्रतिबिम्ब है । उसमें उस ज़माने के सामाजिक जीवन और स्वाधीनता आन्दोलन की विसंगतियां भी झलकती है ।"[1] प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियाँ और उपन्यास देशप्रेम तथा देश के लिए आत्मसमर्पण और बलिदान से सम्बन्धित है । देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्ति देते हुए उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ किया । नामवर सिंह के अनुसार प्रेमचन्द की रचनाओं के एक तरफ देशप्रेम था तो दूसरी तरफ समाज-सुधार ।

प्रेमचन्द ने जब साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया, तब समाज, साहित्य और राजनीति चुनौतियों से भरा था । गद्य विधाओं का आरम्भ हो चुका था और रचनाएं विषय के संदर्भ में समाज से बहुत दूर था । सामन्ती, साम्राज्यवादी शोषण, जातिप्रथा और ज़मींदारी व्यवस्था के कारण आम जनता के जीवन जटिलताओं के बीच उलझा हुआ था । इसी समय पूरे भारत में आज़ादी की लड़ाई की गुहार प्रतिध्वनित हो रहा था । इन चुनौतियों के बीच से प्रेमचन्द ने अपना रचनात्मक व्यक्तित्व के साथ साहित्य के जंग भूमी में कूद पड़ा । उन्होंने उपन्यास और कहानी को समाज के साथ जोड़ा तथा उसे एक देशी रूप प्रदान किया । साहित्यिक रचनाओं तथा सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से उन्होंने स्वाधीनता आन्दोलन का साथ दिया केवल कलम से ही नहीं सक्रिय भागीदारी से भी उन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में प्रवृत्त हुए । 1917 के पहले वे तिलक से प्रभावित थे तो भारतीय राजनीतिक क्षेत्र मे गाँधी जी के आगमन से वे गाँधी चिन्तन से प्रभावित हुए । वे गाँधी जी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन के समर्थकों में एक थे, फिर भी अपने गुरु समान गाँधी जी की आलोचना करने तथा उनसे असहमति प्रकट करने में कतराते नहीं थे। वे गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के ऐसे प्रतिबध्द

[1] Ramavilas. dr. sharma, premchand aur unaka yug, meharchand munshiram, 1961, p. 91
डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, मेहरचन्द मुन्शीराम,1961, पृ. 91

समर्थक थे। उन्होंने खुद कुछ सोचे बगैर नौकरी से इस्तिफा दे दिया। एक समय ऐसा भी था जब गाँधी चिन्तन के क्रियान्वयन में प्रेमचन्द ने द्वन्द्व महसूस किया लेकिन थोडी समय पश्चात वे उस द्वन्द्व से बाहर निकल गए। प्रेमचन्द के लिए अहिंसा और सत्याग्रह स्वराज्य प्राप्ति को आसान बनाने का मार्ग मात्र था जिसे उन्होंने बार-बार अपने लेखों द्वारा स्पष्ट किया। इसलिए शायद अहिंसा पर विश्वास रखने के बावजूद भी कई उपन्यासों में स्वाधीनता आन्दोलन से सम्बंद्धित क्रान्ति और क्रान्तिकारियों का सहानुभूति के साथ समर्थन करते हुए दिखाई पड़ते हैं। प्रेमाश्रम में गैंस खां की हत्या और गबन में क्रांतिकारियों का मुकदमा इसी सहनुभूति से उत्पन्न है।

1906 में स्वराज शब्द प्रचलन में आया अपनी रचनाओं के प्रारम्भिक समय में ही प्रेमचन्द पूर्ण स्वतंत्रता या पूर्ण स्वराज के पक्षधर थे। इसलिए स्वराज की चर्चा लगभग उनके सभी रचनाओं में प्राप्त है। आम जनता को स्वराज की शिक्षा देने या स्वराज की व्याख्या देने केलिए उन्होंने 'स्वराज के फायदे' नमक एक लेख भी प्रकाशित किया, जिसमें स्वराज क्या है, उसके फायदे, भेद और साधन पर विचार किया गया है। प्रेमचन्द ने स्वराज की परिभाषा इस प्रकार किया है – " अपने देश का पूरा-पूरा इन्तज़ाम जब प्रजा के हाथों में हो तो उसे स्वराज कहते है। जिन देशों में स्वराज है वहाँ की प्रजा अपने ही चुने हुए पंचों द्वारा अपने ऊपर राज करती है। "[2] प्रेमचन्द की दृष्टि में स्वराज्य सम्बन्धी परिकल्पना पहले से ही पक्के थे। उनके लिए स्वराज्य या राष्ट्र मुक्ति केवल राजनीतिक दृष्टि से ग्रहित संकल्पना नहीं थे। उन्होंने स्वराज्य का सम्बन्ध देश की सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक मुक्ति तथा मज़दूरों, किसानों, स्त्रियों-दलितों के मुक्ति से जोड़ा। स्वराज्य सम्बन्धी प्रेमचन्द की संकल्पना 1919 में प्रकाशित 'पुराना ज़माना नया ज़माना' लेख में स्पष्ट है। स्वाधीनता संग्राम के खिलाफ खडे होने वालों के मकसद को प्रेमचन्द भलीभाँति जानते थे। 'स्वराज से किसका अहित होगा' शीर्षक लेख में स्वराज विरोधी लोगों पर प्रेमचन्द ने इस प्रकार टिप्पणी किया है- " कुछ लोग स्वराज आंदोलन से इसलिए घबड़ा रहे हैं कि इससे उनके हितों की हत्या हो जाएगी। और, इस भय के कारण या तो दूर से इस संग्राम का तमाशा देख रहे हैं या जिन्हें अपनी प्रभुता ज़्यादा प्यारी है वे परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सरकार का साथ देन पर आमादा हैं। इनमें अधिकांश हमारे ज़मींदार, सरकारी नौकर, बड़े-बड़े व्यापारी और रुपयेवाले लोग शामिल हैं। उन्हें भय है कि अगर यह आन्दोलन सफल हो गया तो ज़मींदारी छीन जायगी, नौकरी से अलग कर दिये जायँगे, धन जब्त कर लिया जायगा। इसलिए इस आंदोलन को सिर न उठाने दिया जाय। उन्हें ब्रिटीश सरकार के बने रहने में अपनी कुशल नज़र आती है। "[3] प्रेमचन्द के लिए पराधीन राष्ट्र गुलामी की

[2] Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p. 262
प्रेमचन्द के विचार, भाग एक, प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.262

[3] Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p.35
प्रेमचन्द के विचार, भाग एक, प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.35

भेडियों के समान थे। वे अपने लेखन के द्वारा स्वराज्य को वाणी देना चाहते थे। उनके शब्दों में " स्वाधीन बनकर आधी खा लेना गुलामी की पूरी से कहीं अच्छा है। "[4] साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ वे जमकर लिखते थे, उनके हर एक अक्षर के पीछे राष्ट्र की साम्राज्यवादी-सामन्तवादी शक्तियों के खिलाफ क्रान्ती की भावना मौजूद थे। प्रेमचन्द की मान्यता में साम्राज्यवादी-सामन्तवादी शोषण से मुक्ति से ही स्वाधीनता की प्राप्ति हो सकती है। इस लिए उन्होंने सीधे सामन्तवाद से टक्कर ली क्योंकि साम्राज्यवाद, सामन्तवाद से ही पोषित हो रहे थे। " जब तक सामंतवाद का विरोध नहीं होगा, तब तक सही मायने में पूरे तौर पर साम्राज्यवाद विरोध नहीं हो सकता। प्रेमचन्द की यही स्थापना उन्हें समाज-सुधारकों से आगे ले जाती है। उनकी यह स्थापना स्वराज्य की परिभाषा करने में की दिशा में एक कदम है। "[5] 1920 तक के लेखों के माध्यम से प्रेमचन्द यह स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे थे कि सामन्तवाद के विरोध का अर्थ है साम्राज्यवाद का विरोध। प्रेमचन्द हिन्दु-मुसलमान के बीच के भेदभाव को स्वाधीनता प्राप्ति के रास्ते में एक बाधा मानते थे। बाँटो और राज करो की नीति से वे पूरी तरह वाकिफ थे। इसलिए उन्होंने इस धार्मिक भेदभाव को हटाने का प्रयास साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से लगातार करता रहा।

'सोजे वतन' 1909 में प्रकाशित हुआ था। सोजे वतन में प्रेमचन्द के देशभक्ति की भावना के पराकाष्ठा का परिचय मिलता है। 'सोजे वतन' के रचना संदर्भ के सम्बंध में प्रेमचन्द ने अपने आत्मकथात्मक लेख में लिखा है कि " बंगाल का बॉटवारा हो चुका था और कॉग्रेस के भीतर एक रेडिकल समूह भी उभर आया था। मैंने इन पाँच कहानियों में देशभक्ति के तराने गाए है। "[6] सोजे वतन के प्रकाशन का समय जन जागृति का समय भी था। तत्कालीन सरकार ने उनकी देशभक्तिपूर्ण रचनाओं को राजद्रोही साहित्य करार दिया, जिसके चलते प्रेमचन्द पर कानूनी अभियोग लगा तथा सोजे वतन की प्रतियाँ जला दी गई। लेकिन इन सबके बावजूद प्रेमचन्द के अन्दर देश भक्ति की लपटें बुझने की जगह वह आग प्रज्वलित हुआ। असल में इस 'साहित्य दहन क्रिया' से प्रेमचन्द के भीतर देशभक्ति का नया रूप विकसित हुआ। सोजे वतन के दौर लिखी गयी कहानियों के नायक देश के लिए त्याग और समर्पण करने वाले थे, देश और प्राण में से देश को चुनने वाले थे। 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' नामक कहानी की राजकुमारी दिलफरेब नायक दिलफिगार से यह शर्त रखती है कि वह उस आदमी से विवाह करेगी, जो दुनिया का सबसे अनमोल रतन लेकर आएगा। दिलफिगार रतन की तलाश में

[4] Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p.36
प्रेमचन्द के विचार, भाग एक , प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.36

[5] Sinh. Namavar, premchand aur bharatiya samaj, rajakamal prakashan, 2017, p.120
सिंह. नमवर सिंह, प्रेमचन्द और भारतीय समाज, राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ.120

[6] Prasad sinh. Murali manohar, Vigat mahata aur vartaman arthavata (ed), rajakamal prakashan, 2006, p.26
प्रसाद सिंह. मुरली मनोहर द्वारा सम्पादित, विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता, राजकमल प्रकाशन, 2006, पृ.26

दुनिया भर घूमने के बाद हिंदुस्तान में पहुँचता है। वहाँ दिलफिगार स्वतंत्रता संग्राम की मैदान में एक घायल योद्धा को देखता है जो 'भारत माता की जय' नारा लगाते हुए आखिरी सास ले रहा था। योद्धा के सीने से खून का आखिरी बूँद धरती पर गिर पड़ा। उस समय दिलफिगार समझा 'देश की रक्षा के लिए गिरी खून का आखिरी बूँद ही दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है।' सोजे वतन के समय की रचनाओं में प्रेमचन्द में देशभक्ति के उग्र रूप दिखाई पडते हैं। घायल सिपाही के शब्द असल में प्रेमचन्द का विद्रोही शब्द ही है " खून निकलने दे, इसे रोकने से क्या फायदा ? क्या मैं अपने ही देश में गुलामी करने के लिए ज़िंदा रहूँ ? नहीं, ऐसी ज़िन्दगी से मर जाना अच्छा। इससे अच्छी मौत मुमकिन नहीं।"[7] सोजे वतन के द्वारा राष्ट्र प्रेम की जो लहर प्रेमचन्द में विकसित हुई थी, नई जीवन दृष्टि के आगमन के बावजूद भी देशप्रेम की वह चिनगारी उनके अंतिम समय तक बुझी नहीं। बल्कि वह विद्रोही भाव, नया रूप धारण करके सामने आया। 'लालफीता', 'मृत्यु के पिछे' आदि असहयोग आन्दोलन के प्रचार प्रसार के लिए लिखी गयी कहानियाँ है। प्रेमचन्द के स्वाधीनता संग्राम सम्बन्धी कहानियों से स्पष्ट था कि वे किसान, मज़दूर, गरीब सहित आम जनता को असली नायक समझते थे। 'समर यात्रा' और 'आहूति' इसी प्रकार की कहानियाँ है। 'कातिल की माँ' स्वतंत्रता आन्दोलन से सम्बन्धित कहानी है। कातिल की माँ में विनोद की माँ अपने बेटे को सझाती है " जो स्वराज जनता के प्रयासों से हासिल किया जाएगा, वह जनता की सम्पत्ति होगा। जिस स्वराज को व्यक्ति अपनी कोशिशों से हासिल करेंगे, वह व्यक्तियों का ही होगा। अगर वह कुछ लोगों द्वारा लाया जाएगा, तो उन लोगों का एक छोटा समूह ही तलवार के बल पर राज करेगा। हम आम जनता का स्वराज चाहते हैं, न कि एक ऐसे समूह का स्वराज, जो कत्ल करे और खून की नदियाँ बहाए। "[8] इन वाक्यों से स्पष्ट है कि प्रेमचन्द के स्वाधीन राष्ट्र सम्बन्धी अवधारणा क्या थी, वे समाज के आम जनता के द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन लड़ने के पक्षधर थे। उनकी कुछ कहानियाँ स्वतंत्रता संग्राम के समय में घटित घटनाओं पर आधारित है तो कुछ कहानियों के विषय अलग है लेकिन मूल स्वर राष्ट्र मुक्ति ही है।

गबन का नायक रामनाथ के लिए देवीदीन देशी कपडे खरीदकर लाता है तो रामनाथ कहते है कि उसे कीमती कपडे नहीं चाहिए तब देवीदीन कहते हैं " जिस देश में रहते हैं, जिसका अन्न-जल खाते हैं, उसके लिए इतना भी न करें, तो जीना धिक्कार है। दो जवान बेटे ने इसी सुदेशी की भेंट कर चुका हूँ, भैया। "[9] देवीदीन के

[7] Premchand gupt dhan, Sarasvati press, 1993, p.20
प्रेमचन्द का गुप्त धन, सरस्वति प्रेस, 1993, पृ.20

[8] Manasarovar, volume 1, h.a.k books, 2018, p.53
मानसरोवर, भाग एक, एच ए के बुक्स, 2018, पृ.53

[9] Premchand, Gaban, sahityagaar,1987, p.153
प्रेमचन्द, गबन, साहित्यागार, 1987, पृ.153

दोनों बेटों ने असहयोग आंदोलन में जीवन त्याग किये थे । तब से विदेशी दिया सलाई तक घर में नहीं लाया । अपने रचनाकाल में प्रेमचन्द की सबसे बडी चिन्ता राष्ट्र की स्वतंत्रता ही थी । प्रेमाश्रम, गबन, कर्मभूमि, सेवासदन , रंगभूमि आदि उपन्यासों में अपने समय की राष्ट्र मुक्ति आंदोलन का जीवन्त चित्रण प्राप्त होता है । स्वतंत्रता संग्राम के मैदान में अद्भुत साहस दिखाने वाली स्त्रियों का जीवन्त चित्रण प्रेमचन्द की रचनाओं में हैं। गबन का जालपा, रंगभूमि की सोफिया, संग्राम की राजेश्वरी, प्रेमाश्रम की गायत्री आदि । प्रेमाश्रम के 'बलराज' रूस के समाजवादी क्रान्ति के फलस्वरूप किसानों और मज़दूरों को मिले अधिकारों के समबन्ध में बातें करता है। यह 1917 के समाजवादी क्रान्ति के तुरन्त बाद की बात है । प्रेमचन्द में स्वराज की चाह इतना था कि वे बीचों बीच क्रान्ति की भावना से आन्दोलित होते थे । 1930 में बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे पत्र में प्रेमचन्द ने अपने स्वतंत्रता की चाह को इस प्रकार व्यक्त किया है – " मेरी अभिलाषाएँ बहुत सीमित हैं । इस समय सबसे बड़ी अभिलाषा यही है कि हम अपने स्वतंत्रता संग्राम में सफल हों । मैं और शोहरत का इच्छुक नहीं हूँ । खाने को मिल जाता है । मोटर और बंगले की मुझे हबिस नहीं है । हँ यह ज़रूर चाहता हूँ कि दो चार उच्चकोटि की रचनाएँ छोड़ जाऊँ लेकिन उनका उद्देश्य भी स्वतंत्रता प्राप्ति ही हो । "[10] इन्हीं शब्दों से स्पष्ट है कि वे भारत की स्वतत्रता को कितने चाहते थे ।

प्रेमचन्द ने अपने संवेदनशील दृष्टि से पूरे भारत के स्वाधीनता संग्राम को देखा परखा और अपने सर्जनात्मक शक्ति के द्वारा देश की तत्कालीन वातावरण को प्रामाणिकता के साथ उद्घाटित किया । देश के प्रति प्रेमचन्द ने अपना दायित्व रचनाओं के द्वारा दो प्रकार से प्रकट किया । एक तो उन्होंने सीधा देशभक्ति से सम्बन्धित साहित्यिक रचना की तो दूसरी तरफ साम्राज्यवादियों और समन्तवादियों के जुल्म की कहानियाँ लिखी । उनके लिए साम्राज्यवाद और समन्तवाद एक ही सिक्के के दो पहलू है । उनके अनुसार यह दोनों देश के हित के लिए खतरनाक है । इसलिए उन्होंने साम्राज्यवादी शोषण के साथ-साथ सामन्तवादी शोषण को भी अपनी रचना का विषय बनाया । वे मानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किसान, मज़दूर और पिछडे वर्गों के साथ किए जा रहे शोषण व्यवस्था का अंत होना ज़रूरी था । इस आधार पर रामविलास शर्मा ने ठीक ही अभिहित किया कि प्रेमचन्द 'स्वाधीनता आन्दोलन का कथाकार' है । प्रेमचन्द के सम्पूर्ण साहित्य में स्वाधीनता का व्यापक एवं विस्तृत अर्थ व्यक्त हुआ है । प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में स्वाधीनता आन्दोलन की उपलब्धियों और कमज़ोरियों पर समय समय पर टिप्पणी दी थी । आज़ादी की चाह उनके दिमाग में जड़ के समान फैला हुआ था जिसका प्रतिफलन उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित है । उनका यह रचनात्मक कार्य पराधीन शक्तियों के प्रति एक प्रकार का जंग था । स्वाधीनता आन्दोलन के रचनाकारों में प्रेमचन्द अनूठे है ।

[10] Premchand rachanavali, janavani prakashan, valume 19, 1996, p.277
प्रेमचन्द रचनावली, जनवाणी प्रकाशन, भाग 19, 1996, पृ.277

संदर्भ ग्रंथ सूची:

[1]Ramavilas. dr. sharma, premchand aur unaka yug, meharchand munshiram, 1961, p. 91

डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, मेहरचन्द मुन्शीराम,1961, पृ. 91

[2] Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p. 262

प्रेमचन्द के विचार, भाग एक, प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.262

[3] Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p.35

प्रेमचन्द के विचार, भाग एक, प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.35

[4]Premchand ke vichar, valume one, prakashan sansthan, 2003, p.36

प्रेमचन्द के विचार, भाग एक , प्रकाशन संस्थान, 2003, पृ.36

[5]Sinh. Namavar, premchand aur bharatiya samaj, rajakamal prakashan, 2017, p.120

सिंह. नमवर सिंह, प्रेमचन्द और भारतीय समाज, राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ.120

[6]Prasad sinh. Murali manohar, Vigat mahata aur vartaman arthavata (ed), rajakamal prakashan, 2006, p.26

प्रसाद सिंह. मुरली मनोहर द्वारा सम्पादित, विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता, राजकमल प्रकाशन, 2006, पृ.26

[7] Premchand gupt dhan, Sarasvati press, 1993, p.20

प्रेमचन्द का गुप्त धन, सरस्वति प्रेस, 1993, पृ.20

[8] Manasarovar, volume 1, h.a.k books, 2018, p.53

मानसरोवर, भाग एक, एच ए के बुक्स, 2018, पृ.53

[9] Premchand, Gaban, sahityagaar,1987, p.153

प्रेमचन्द, गबन, साहित्यागार, 1987, पृ.153

[10] Premchand rachanavali, janavani prakashan, valume 19, 1996, p.277

****